3

Set No. 1	**18P/276/24**	00007

Total No. of Printed Pages : 24 | **Question Booklet No.**

(To be filled up by the candidate by blue/black ball-point pen)

Roll No. | | | | | | | | | | |

Roll No. (Write the digits in words) ....2019...............

Serial No. of OMR Answer Sheet ....

Centre Code No. | | | | |

Day and Date ....

....
(Signature of Invigilator)

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

(Use only ***blue/black ball-point pen*** in the space above and on both sides of the **Answer Sheet**)

1. Within 30 minutes of the issue of the Question Booklet, check the Question Booklet to ensure that it contains all the pages in correct sequence and that no page/question is missing. In case of faulty Question Booklet bring it to the notice of the Superintendent/Invigilators immediately to obtain a fresh Question Booklet.
2. Do not bring any loose paper, written or blank, inside the Examination Hall *except the Admit Card.*
3. ***A separate OMR Answer Sheet is given. It should not be folded or mutilated. A second OMR Answer Sheet shall not be provided. Only the OMR Answer Sheet will be evaluated.***
4. Write all entries by blue/black pen in the space provided above.
5. ***On the front page of the OMR Answer Sheet write by pen your Roll Number in the space provided at the top and by darkening the circles at the bottom. Also, write the Question Booklet Number, Centre code Number and the Set Number whereever applicable in appropriate places.***
6. ***No overwriting is allowed in the entries of Roll No., Question Booklet no. and Set no. (if any) on OMR Answer Sheet and Roll No. and OMR Answer Sheet no. on the Question Booklet.***
7. ***Any change in the aforesaid entries is to be verified by the invigilator, otherwise it will be taken as unfairmeans.***
8. ***Each question in this Booklet is followed by four alternative answers. For each question, you are to record the correct option on the OMR Answer Sheet by darkening the appropriate circle in the corresponding row of the OMR Answer Sheet, by pen as mentioned in the guidelines given on the first page of the OMR Answer Sheet.***
9. For each question, darken only one circle on the **OMR** Answer Sheet. If you darken more than one circle or darken a circle partially, the answer will be treated as incorrect.
10. *Note that the answer once filled in ink cannot be changed. If you do not wish to attempt a question, leave all the circles in the corresponding row blank (such question will be awarded zero marks).*
11. For rough work, use the inner back page of the title cover and the blank page at the end of this Booklet.
12. On completion of the Test, the candidate must handover the OMR Answer Sheet to the Invigilator in the examination room/hall. However, candidates are allowed to take away Test Booklet and copy of OMR Answer Sheet with them.
13. Candidates are not permitted to leave the Examination Hall until the end of the Test.
14. If a candidate attempts to use any form of unfair means, he/she shall be liable to such punishment as the University may determine and impose on him/her.

139

ROUGH WORK
रफ़ कार्य

18P/276/24

No. of Questions : 120

प्रश्नों की संख्या : 120

Time : 2 Hours | ***Full Marks : 360***

समय : 2 घण्टे | ***पूर्णाङ्क : 360***

Note : (1) Attempt as many questions as you can. Each question carries **3 (Three)** marks. ***One mark will be deducted for each incorrect answer***. **Zero** mark will be awarded for each unattempted question.

अधिकाधिक प्रश्नों को हल करने का प्रयत्न करें। प्रत्येक प्रश्न **3** (तीन) अंकों का है। *प्रत्येक गलत उत्तर के लिए एक अंक काटा जायेगा।* प्रत्येक अनुत्तरित प्रश्न का प्राप्तांक *शून्य* होगा।

(2) If more than one alternative answers seem to be approximate to the correct answer, choose the closest one.

यदि एकाधिक वैकल्पिक उत्तर सही उत्तर के निकट प्रतीत हों, तो निकटतम सही उत्तर दें।

01. सद्धर्म के उपदेष्टा थे -

(1) गौतम बुद्ध (2) आनन्द (3) शारिपुत्र (4) मौद्गल्यायन

02. भगवान् बुद्ध का जन्म इस स्थान में हुआ था -

(1) सारनाथ (2) कपिलवस्तु (3) कुसीनगर (4) लुम्बिनीवन

03. बुद्ध की माता का नाम था -

(1) गौतमी प्रजापति (2) महामाया देवी

(3) यशोघरा (4) गोपा

04. बुद्ध के उपदेशों की मूल भाषा थी -

(1) पालि (2) प्राकृत (3) अर्धमागधी (4) पैशाची

05. बुद्ध के प्रधान शिष्य थे -

(1) तिष्य (2) मौद्गल्यायन (3) आनन्द (4) वत्सगोत्र

06. बुद्ध थे -

(1) एक ऐतिहासिक पुरुष (2) एक काल्पनिक व्यक्ति

(3) एक स्वर्गस्थ देवपुरुष (4) एक चक्रवर्ती राजा

07. देवदत्त थे -

(1) बुद्ध के सगे बड़े भाई (2) सिद्धार्थ के अनुज

(3) सिद्धार्थ के चचेरे भाई (4) सिद्धार्थ के गुरुपुत्र

08. तं गौरवं बुद्धगतं चकर्ष
भार्यानुराग: पुनराचकर्ष ।
सोऽनिश्चयान्नापि ययौ न तस्थौ
सरंस्तरङ्गेष्विव राजहंस: ।।

यह श्लोक इस ग्रन्थ से उद्धृत है -

(1) ललित विस्तर (2) तथागतगुह्यकसूत्र

(3) बुद्धचरित महाकाव्य (4) सौन्दरनन्द महाकाव्य

09. बुद्ध के पिता का नाम था -

(1) सुप्रबुद्ध (2) सिद्धार्थ (3) शुद्धोदन (4) बिम्बिसार

10. अजातशत्रु यहाँ के राजा थे ?

(1) मगघ (2) अङ्ग (3) कलिङ्ग (4) काशी

11. बुद्ध के समय में उत्तरी भारत में जनपदों की सङ्ख्या थी -

(1) पन्द्रह (2) सोलह (3) दस (4) नौ

12. कौशाम्बी के प्रतापी प्रसिद्ध राजा का नाम था -

(1) उदयन (2) उदायि (3) अजातशत्रु (4) देवदत्त

13. बुद्ध का निवास स्थान इस स्थान में था -

(1) कपिलवस्तु (2) देवदह (3) राजधानी (4) श्रावस्ती

14. परिनिर्वाण के समय बुद्ध की आयु थी -

(1) अस्सी (80) वर्ष (2) उन्न्यासी (79) वर्ष

(3) पचहत्तर (75) वर्ष (4) नब्बे (90) वर्ष

15. कन्थक था -

(1) सिद्धार्थ गौतम का हाथी (2) सिद्धार्थ गौतम का घोड़ा

(3) ब्रह्मा के रथ का घोड़ा (4) इन्द्र के रथ का घोड़ा

16. त्रिपिटक के अंश हैं -

(1) सुत्तपिटक, अमिघम्मपिटक, विनय पिटक

(2) सूत्रकृताङ्ग, समवायाङ्ग, उवासगदसाओ

(3) सिद्धार्थ चरित, बुद्धचरित, सौन्दरनन्द, महाकाव्य

(4) ललितविस्तर, लङ्कावतार, दीघनिकाय

17. बुद्धचरित महाकाव्य इनकी कृति है -

(1) कालिदास (2) माघ (3) अश्वघोष (4) बुद्धघोष

18. सौन्दरनन्द महाकाव्य में इनकी बौद्ध सङ्घ में सम्मिलित होने की कथा वर्णित है -

(1) सुन्दरी – नन्द
(2) देवदत्त – सुन्दरी
(3) सिद्धार्थ - यशोधरा
(4) गौतमी - शुद्धोदन

19. शारिपुत्रप्रकरण के रचयिता हैं -

(1) अश्वघोष (2) बुद्धघोष (3) धर्मकीर्ति (4) कालिदास

20. आर्यसत्यों की सङ्ख्या है –

(1) पाँच (2) चार (3) तीन (4) दो

21. प्रतीत्यसमुत्पाद में भवाङ्गों की सङ्ख्या है -

(1) बारह (2) दस (3) नौ (4) तेरह

22. आर्याष्टाङ्गिक मार्ग के आठ अङ्गों का क्रम है -

(1) सम्यग् दृष्टि, सम्यक् सङ्कल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि।

(2) सम्यक् संकल्प, सम्यक्वाक, सम्यक् स्मृति, सम्यक् दृष्टि, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् समाधि, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव,

(3) सम्यक् दृष्टि, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् वाक्, सम्यक् सङ्कल्प, सम्यक् स्मृति, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् आजीव, सम्यक् समाधि।

(4) सम्यक् दृष्टि, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् वाक्, सम्यक् स्मृति, सम्यक् सङ्कल्प, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् समाधि

23. भगवान् बुद्ध को सम्यक् सम्बोधि की प्राप्ति इस स्थान में हुई थी -

(1) कुसीनगर (2) राजगृह (3) बोधगया (4) श्रावस्ती

24. बुद्ध के शाक्यवंशीय पूर्वज थे -

(1) सूर्यवंशी क्षत्रिय (2) चन्द्रवंशी क्षत्रिय

(3) कौशिक क्षत्रिय (4) गौतम गोत्रीय ब्राह्मण

25. बुद्ध का मध्यम मार्ग है -

(1) अस्ति – नस्ति के बीच का मार्ग

(2) ऊँच – नीच के बीच का बोधक मार्ग

(3) ज्ञान – अज्ञान के बीच का मार्ग

(4) स्वर्ग-नरक के बीच का मार्ग

26. अविद्या है -

(1) पूर्वजन्म की क्लेश-दशा (2) ऐहिक कर्मों का अज्ञान

(3) आमुष्मिक कलेशों का अज्ञान (4) किसी भी विषय का अज्ञान

27. भगवान् बुद्ध अपनी माता से मिलने इस लोक में गये थे -

(1) नरक लोक (2) स्वर्ग लोक (3) तुषित लोक (4) नाग लोक

28. बुद्ध की पत्नी का नाम था -

(1) यशोघरा या गोपा (2) गौतमी

(3) खेमा (4) तिस्सा

29. बुद्ध का ननिहाल यहाँ था -

(1) देवदह (2) मगध (3) श्रावस्ती (4) कपिलवस्तु

30. बुद्ध के पुत्र का नाम था -

(1) राहुल (2) देवदत्त (3) अजातशत्रु (4) उद्यापि

31. अङ्गुलिमाल था -

(1) एक क्रूर डाकू जिसे बुद्ध ने सङ्घ में दीक्षित किया था

(2) एक किसान

(3) एक श्रमिक

(4) एक सैनिक

32. धम्मपद की मूल भाषा है -

(1) पालि (2) प्राकृत (3) हिन्दी (4) अर्धमागधी

33. सब्बे धम्मा दुक्खा' ति
यदा पञ्ञाय पस्सति ।
अथ निब्बिन्दती दुक्खे
एस मग्गो सिसुद्धिया ।।

यह गाथा इस ग्रन्थ से उद्धृत है -

(1) सुत्त निपात (2) धम्मसङ्गणि

(3) धम्मपद (4) अभिधम्मत्थसङ्गहो

34. अन्तो जटा बहिजटा जटाय जटिता पजा ।
तं तं गोतम पुच्छामि को इमं विजटये जटं ।।
यह गाथा इस ग्रन्थ में उद्धृत और व्याख्यात है -

(1) अभिधम्मत्थसङ्गहो (2) विसुद्धिमग्गो
(3) सम्मोह विनोदनी (4) अट्ठसालिनी

35. इस ग्रन्थ में पद्यों के माध्यम से बुद्ध के उपदेश सरल रीति में समझाये गये हैं -

(1) सुत्तनिपात (2) संयुत्तनिकाय (3) धम्मपद (4) नैरात्म्यपरिपृच्छा

36. बौद्धों की गीता है -

(1) धम्मपद (2) सुत्तनिपात (3) थेरगाथा (4) थेरीगाथा

37. पिटकों की मूल भाषा है -

(1) मागधी या पालि (2) संस्कृत
(3) अर्धमागधी (4) प्राकृत

38. निकाय इस पिटक के अङ्ग हैं -

(1) अभिधम्म पिटक (2) बोधिसत्त्व पिटक
(3) विनय पिटक (4) सुत्तपिटक

39. विनयपिटक में सङ्गृहीत हैं -

(1) सङ्घ के सदस्यों के आचारगत नियम
(2) सङ्घ के सदस्यों की सूची
(3) दार्शनिक सिद्धान्त
(4) सङ्घ का विभाजन एवं निकायों का उदय

40. कथावस्तु के लेखक / सङ्ग्रहीता हैं -

(1) अश्वघोष
(2) मोग्गालिपुत्र तिस्स
(3) आनन्द
(4) मोग्गलान

41. दार्शनिक सिद्धान्त प्रतिवर्णित हैं -

(1) अभिधम्म पिटक में
(2) धम्मपद में
(3) सुत्तपिटक में
(4) विनयपिटक में

42. बुद्ध की जीवनी के अंश इस निकाय में सङ्गृहीत हैं -

(1) दीघनिकाय,
(2) अङ्गुत्तर निकाय
(3) संयुत्तनिकाय
(4) मज्झिम निकाय

43. अभिधम्मत्थ सङ्गहों के रचयिता हैं -

(1) अनिरुद्ध (2) वसुबन्धु (3) बुद्धघोष (4) मोग्गलान

44. देवनागरी लिपि में सम्पूर्ण त्रिपिटक का सम्पादन प्रकाशन यहाँ से हुआ है ?

(1) नालन्दा, इगतपुरी
(2) पूणे, मुम्बई
(3) जामनगर, अजमेर
(4) चेन्नई, मैसूर

45. बुद्ध ने दु:ख समुदय का हेतु बताया है -

(1) तण्हा (तृष्णा) (2) विचार (3) सुखभोग (4) वितर्क

46. वैभाषिक सम्प्रदाय निर्वाण को मानता है -

(1) भावरूप, सुखस्वरूप
(2) आत्मसाक्षात्कारस्वरूप
(3) विज्ञप्ति
(4) अविज्ञप्ति

47. संस्कृत धर्मों की संख्या है -

(1) बहत्तर (72) (2) अठहत्तर (78) (3) अस्सी (80) (4) पैंसठ (65)

48. वैभाषिक जगत् को मानता है -

(1) क्षणभङ्गुर और प्रत्यक्ष
(2) नित्य और प्रत्यक्ष
(3) नित्य और अनुमेय
(4) क्षणिक और अनुमेय

49. सौत्रान्तिक मत में जगत् है -

(1) अनुमेय (2) प्रत्यक्ष (3) नित्य (4) शून्य

50. योगाचार मत में जगत् को माना गया है -

(1) असत्
(2) सत् और नित्य
(3) शून्य और नि:स्वभाव
(4) पारदर्शी

51. 'विज्ञप्तिमात्रमेवैतदसदर्थावभासनात् ।

यह पंक्ति इस ग्रन्थ से उद्धृत है -

(1) विंशिका (2) त्रिंशिका (3) लङ्कावतारसूत्र (4) ललितविस्तर

52. अभिधर्म कोश के रचयिता हैं -

(1) असङ्ग (2) दिङ्नाग (3) वसुबन्धु (4) धर्मकीर्ति

53. अभिधर्मकोशभाष्य के रचयिता हैं -

(1) असङ्ग (2) भर्तृहरि (3) वसुबन्धु (4) यशोमित्र

54. त्रिस्वभावनिर्देश के रचयिता हैं -

(1) असङ्ग (2) नागार्जुन (3) आर्यदेव (4) वसुबन्धु

55. पञ्चस्कन्धप्रकरण के रचयिता हैं -

(1) वसुबन्धु (2) असङ्ग (3) स्थिरमति (4) दिङ्नाग

56. बोधिसत्त्वभूमि के लेखक हैं ?

(1) आर्य असङ्ग (2) मैत्रेयनाथ (3) वसुबन्धु (4) स्थिरमति

57. श्रावकभूमि के रचयिता हैं -

(1) असङ्ग (2) वसुबन्धु (3) मैत्रेयनाथपाद (4) दिङ्नाग

58. योगाचारभूमिशास्त्र के रचयिता हैं -

(1) आर्य असङ्ग (2) मैत्रेयनाथ (3) आचार्य वसुबन्धु (4) धर्मकीर्ति

59. प्रमाणसमुच्चय इनकी रचना है -

(1) धर्मकीर्ति (2) प्रवरसेन (3) दिङ्नाग (4) असङ्ग

60. प्रमाणवार्त्तिक के रचयिता हैं -

(1) आचार्य दिङ्नाग (2) आचार्य मैत्रेयनाथ

(3) आचार्य स्थिरमति (4) आचार्य धर्मकीर्ति

61. प्रमाणवार्त्तिक के प्रज्ञालङ्कार भाष्य के रचयिता हैं -

(1) प्रज्ञाकर गुप्त (2) दिङ्नाग (3) स्थिरमति (4) ज्ञान श्री मित्र

62. स्थिर सिद्धिदूषण इनकी रचना है -

(1) रत्नकीर्ति (2) धर्मकीर्ति (3) ज्ञानश्रीमित्र (4) प्रज्ञाकरगुप्त

63. साकारसङ्ग्रहसूत्र के रचनाकार हैं -

(1) ज्ञानश्रीमित्र (2) धर्मकीर्ति (3) रत्नकीर्ति (4) स्थिरमति

64. माध्यमिक कारिका के रचयिता हैं -

(1) आचार्य चन्द्रकीर्ति (2) आचार्य भद्रसेन

(3) आचार्य आर्य देव (4) आचार्य नागार्जुन

65. इनमें से कौन आचार्य माध्यमिक कारिका का टीकाकार नहीं है ?

(1) भव्य या भावविवेक (2) रत्नकीर्ति

(3) चन्द्रकीर्ति (4) बुद्धपालित

66. चन्द्रकीर्ति की रचनायें हैं -

(1) मध्यमकावतार, प्रसन्नपदा (2) विग्रहव्यावर्तनी, शून्यतासप्ततिकारिका

(3) हस्तबालप्रकरण, चतु:शतक (4) मर्मप्रदीपवृत्ति, प्रमाणवार्तिक

67. विग्रहव्यावर्तनी का मुख्य प्रतियाद्य है -

(1) माध्यमिक दृष्टि से तर्क-निरसन (2) शून्यता का निरसन

(3) योगाचारमत का खण्डन (4) अभिधर्म - निरास

68. शून्यता सर्वदृष्टीनां प्रोक्ता नि: सरणं जिनै: ।
येषां तु शून्यता दृष्टिस्तानसाध्यान् बभाषिरे ।।
इस कारिका में किया गया है

(1) शून्यता के लक्षण की ओर सङ्केत किया गया है
(2) शून्यता का खण्डन किया गया है
(3) निर्वाण को निरास बताया गया है
(4) निर्वाण का प्रापक उपाय बताया गया है।

69. कर्मक्लेशक्षयान्मोक्ष: कर्मक्लेशा विकल्पत: ।
ते प्रपञ्चात्, प्रपञ्चस्तु शून्यतायां निरुध्यते ।।
यह कारिका इस ग्रन्थ से उद्धृत है-

(1) चतु:स्तव
(2) चतु:शतक
(3) विग्रहव्यावर्तनी
(4) माध्यमिक कारिका

70. मध्यमकावतार के लेखक हैं –

(1) आर्यदेव
(2) नागार्जुन
(3) चन्द्रकीर्ति
(4) धर्मकीर्ति

71. विंशतिका (विंशिका) के रचयिता हैं –

(1) असङ्ग
(2) वसुबन्धु
(3) यशोमित्र
(4) स्थिरमति

72. त्रिंशिका के लेखक हैं –

(1) वसुबन्धु
(2) स्थिरमति
(3) असङ्ग
(4) मैत्रेयनाथ

73. महायानसूत्रालङ्कारकारिका के लेखक हैं -

(1) मैत्रेयनाथ (2) वसुबन्धु (3) ज्ञानश्रीमित्र (4) ह्वेनसाङ्ग

74. सुप्रभातस्तोत्रम् के रयचिता हैं -

(1) श्रीहर्षदेव (2) बाणभट्ट (3) स्थिरमति (4) चन्द्रकीर्ति

75. विज्ञप्तिमात्रता के सिद्धान्त के प्रतिष्ठापक हैं -

(1) वसुबन्धु (2) प्रज्ञाकर गुप्त (3) कुमारलात (4) नागार्जुन

76. सहोपलम्भनियमादभेदो नीलतद्धियो: ।
भेदश्च भ्रान्तिविज्ञानैर्दृश्येतेन्दाविवाद्वये ॥
यह कारिका इनकी रचना है -

(1) असङ्ग (2) मैत्रेयनाथ (3) वसुबन्धु (4) श्रीहर्षदेव

77. माध्यमिक मत में तत्त्व हैं -

(1) सत्
(2) असत्
(3) अनुभय
(4) चतुष्कोटिविनिर्मुक्त

78. माध्यमिक मत में निर्वाण माना गया हैं -

(1) भावरूप
(2) अभावरूप
(3) उभयरूप
(4) भावभावपरामर्शक्षयरूप

79. अप्रहीणमसम्प्राप्तमनुच्छिन्नमशाश्वतम् ।
अनिरुद्धमनुत्पन्नमेतन्निर्वाणमुच्यते ॥
यह कारिका इस ग्रन्थ से उद्धृत है -

(1) चतु : स्तव
(2) चतु : शतक
(3) रत्नावली
(4) माध्यमिक कारिका

80. अपरप्रत्ययं शान्तं प्रपञ्चैरप्रपञ्चितम् ।
निर्विकल्पमनानार्थमेतत्तत्त्वस्य लक्षणम् ।।
यह कारिका इस ग्रन्थ से उद्धृत है -

(1) माध्यमिक कारिका
(2) शून्यतासप्ततिकारिका
(3) विग्रहव्यावर्त्तनी
(4) चतु:षष्ठिका

81. सर्वदृष्टिप्रहाणााय सद्धर्ममदेशयत् ।
अनुकम्पामुपादाय तं नमस्यामि गौतमम् ।।
यह कारिका इन्हें निर्दिष्ट करती है -

(1) शुद्धोदन (2) विपश्यी बुद्ध (3) आनन्द (4) गौतम बुद्ध

82. योगाचार मत में विज्ञान की ही स्वीकृति है। विज्ञान है -

(1) अक्षणिक (2) विषयभिन्न (3) विसंवादी (4) स्वयंवित्तिरूप

83. प्रतीत्यसमुत्पाद कार्य - कारण का सिद्धान्त है जो -

(1) धर्मों के हेतु फल भाव को द्योतित करता है
(2) धर्मों के हेतुफलभाव का निरास करता है
(3) धर्मों को नित्य, सत् व्यवस्थापित करता है
(4) धर्मों को अशून्य नियामित करता है।

84. मुख्य महायान सूत्रों की संख्या है -

(1) नौ (9)
(2) पचास (50)
(3) एकौ पचीस (125)
(4) दो सौ (200)

85. प्राचीनतम प्रज्ञापारमिता है -

(1) शतसाहास्तिका प्रज्ञापारमिता
(2) सार्द्धद्विसादृस्रिका प्रज्ञापारमिता
(3) वज्रच्छेदिका प्रज्ञापारमिता
(4) अष्टसाहस्तिका प्रज्ञापारमिता

86. यह आर्य असङ्ग की रचना है -

(1) आर्य त्रिशतिकाया: प्रज्ञापारमिताया: कारिकासप्तति :

(2) वज्रच्छेदिका प्रज्ञापारमिता

(3) प्रज्ञापारमितापिण्डार्थ

(4) प्रज्ञापारमितास्तव

87. गण्डीस्तोत्रगाथा के रचयिता हैं -

(1) अश्वघोष (2) असङ्ग (3) मैत्रेयनाथ (4) नागार्जुन

88. महायान श्रद्धोत्पाद शास्त्र के रचयिता है -

(1) आचार्य अश्वघोष (2) आचार्य स्थिरमति

(3) आचार्य वसुबन्धु (4) आचार्य बुद्धघोष

89. अभिधर्मसमुच्चय इनकी रचना है

(1) आर्यअसङ्ग (2) आचार्य वसुबन्धु

(3) आचार्य श्रीधरसेन (4) आचार्य मैत्रेयनाथ

90. य: प्रत्ययैर्जायति स ह्यजातो
नो तस्य उत्पादु सभावतोऽस्ति ।
य: प्रत्ययोत्पन्नु स शून्य उक्तो
य: शून्यतां जानति सोऽप्रमत्त: ।।

इस श्लोक में बतायी गयी है -

(1) प्रतीत्यसमुत्पन्न पदार्थों की स्वभावशून्यता

(2) प्रतीत्यसमुत्पन्न पदार्थों की नित्यता

(3) प्रतीत्यसमुत्पन्न पदार्थों की अनित्यता

(4) प्रतीत्यसमुत्पन्न धर्मों की असत् स्वरूपता

91. सौत्रान्तिक मत में धर्मों की संख्या मानी गयी है -

(1) पचहत्तर (75) (2) तैतालीस (43) (3) उन्चास (49) (4) सौ (100)

92. असंस्कृत धर्मों की सङ्ख्या है -

(1) दो (2) तीन (3) एक (4) चार

93. आकाश है एक -

(1) संस्कृत धर्म (2) असंकृत धर्म (3) अविज्ञप्ति धर्म (4) चैतसिक धर्म

94. आकाश है -

(1) अनावरणरूप (2) आवृतिरूप (3) अनित्य (4) संस्कृत

95. वैभाषिक मत में निर्वाण है -

(1) प्रतिसङ्रव्यानिरोधस्वरूप (2) प्रतिसङ्ख्यास्वरूप

(3) क्षणिक (4) अभावरूप

96. सौत्रान्तिक मत में निर्वाण है -

(1) अभावरूप (2) भावरूप (3) उभय (4) अनुभय

97. वैभाषिक मत में संस्कृत धर्मों की सङ्ख्या है -

(1) 72 (2) 45 (3) 92 (4) 75

98. ध्यानों की सङ्ख्या है -

(1) दो (2) तीन (3) चार (4) पाँच

99. अभिधर्म है -

(1) अनास्रव धर्मप्रविचय रूप निर्मलप्रज्ञा

(2) धर्मों का ज्ञान

(3) धर्मों का निषेघ

(4) धर्मों का सङ्ग्रह

100. वज्रसूची के रचयिता हैं -

(1) अश्वघोष (2) कालिदास (3) शङ्कराचार्य (4) धर्मकीर्ति

101. तत्त्वसङ्ग्रह के रचयिता हैं -

(1) शान्तरक्षित (2) वसुबन्धु (3) शान्तिदेव (4) नागार्जुन

102. तत्त्वसङ्ग्रह का प्रतिपाद्य है -

(1) बौद्ध तर्कपद्धतिसे अन्यशास्त्रीय तर्कों का निरास

(2) अन्य मत निरासपूर्वक माध्यमिक विचारधारा की प्रतिष्ठा

(3) अभिधर्म-खण्डन

(4) सौत्रान्तिक-निरसन

103. जातकमाला के रचयिता हैं -

(1) आर्यशूर (2) नागार्जुन (3) अश्वघोष (4) शान्तिदेव

104. जातकमाला में वर्णित हैं -

(1) बुद्ध के पूर्वजीवन की कथायें (2) पूर्व बुद्धों की जीवन-चर्या

(3) पूर्व बुद्धों के उपदेश (4) बोधिसत्त्व की जीवन शैली

105. विज्ञप्तिमात्रता सिद्धि के लेखक हैं -

(1) वसुबन्धु (2) असङ्ग (3) अश्वघोष (4) दिङ्नाग

106. त्रिंशिका विज्ञप्तिभाष्यम् के रचयिता हैं -

(1) स्थिरमति (2) वसुबन्धु (3) दिङ्नाग (4) चन्द्रकीर्ति

107. सुहुल्लेख के रचयिता हैं -

(1) आचार्य नागार्जुन (2) आचार्य चन्द्रकीर्ति

(3) धर्मकीर्ति (4) अश्वघोष

108. बोधिचर्यावतार के रचयिता हैं -

(1) आचार्य शान्तिदेव (2) आचार्य प्रज्ञाकर मति

(3) आचार्य शान्ति भिक्षुशास्त्री (4) आचार्य चन्द्रकीर्ति

109. बोधिचर्यावतार में वर्णित है

(1) बोधिसत्त्व द्वारा छः परमिताओं की चर्या

(2) बोधि का स्वरूप

(3) बोधिसत्त्व का स्वरूप

(4) बोधिसत्त्वों के उपदेश

110. बोधिचित्त है -

(1) द्विविध (2) त्रिविध (3) चतुर्विध (4) पञ्चविध

111. बोधिचित्त के उदय के बाद बोधिसत्त्व की अन्तिम उपलब्धि है -

(1) बोधिकी प्राप्ति और तत्त्वज्ञान, तत्त्व ज्ञान का साक्षात्कार

(2) संवृति की अनित्यता का बोध

(3) अविद्या का तिराधान

(4) संवृति का साक्षात्कार

112. माध्यमिक मत में सत्यों की सङ्ख्या है -

(1) दो (2) तीन (3) चार (4) पाँच

113. संवृति है

(1) व्यवहार या उपायसत्य (2) उपेय सत्य

(3) अन्तिम तत्त्व (4) निर्वाण

114. यह पद्य इस ग्रन्थ से उद्धृत है –

संवृतिः परमार्थश्च सत्यद्वयमिदं मतम् ।

बुद्धेरगोचरस्तत्त्वं बुद्धिः संवृतिरुच्यते ।।

(1) बोधिसत्त्वावदान कल्पलता (2) बोधिसत्त्वभूमि

(3) बोधिचर्यावतार (4) महायानसूत्रालङ्कार

115. बोधिचर्यावतार में शान्तिदेव ने

(1) विज्ञान को परमार्थ मान कर निरूपित किया है

(2) विज्ञान का पोषण किया है

(3) शून्यता को परमार्थ माना है

(4) अविद्या को स्वीकार किया है

116. प्रत्यक्ष है -

(1) नित्य दृष्टज्ञान (2) अविसंवाहि ज्ञान

(3) इन्द्रियोपलब्धज्ञान (4) इन्द्रियार्थ सन्निकर्षज ज्ञान

117. सर्वबीज विज्ञान है -

(1) आलय विज्ञान (2) प्रवृत्ति विज्ञान

(3) क्लिष्ट मनोविज्ञान (4) तथागतगर्भ

118. चित्त का कुटिलभाव कहलाता है -

(1) कौसीद्य (2) शाठ्य (3) आह्लाद (4) अपत्राप्थ

119. संस्तुत वस्तु में असम्प्रमोष कहलाता है -

(1) प्रत्यक्ष (2) स्मृति (3) परार्थानुमान (4) हेतु

120. आत्मधर्मोपचार है -

(1) विज्ञानपरिणाम (2) यथार्थ ज्ञान (3) अयथार्थ बोध (4) कर्मफल

ROUGH WORK

रफ़ कार्य

अभ्यर्थियों के लिए निर्देश

(इस पुस्तिका के प्रथम आवरण पृष्ठ पर तथा उत्तर-पत्र के दोनों पृष्ठों पर केवल नीली/काली बाल-प्वाइंट पेन से ही लिखें)

1. प्रश्न पुस्तिका मिलने के 30 मिनट के अन्दर ही देख लें कि प्रश्नपत्र में सभी पृष्ठ मौजूद हैं और कोई प्रश्न छूटा नहीं है। पुस्तिका दोषयुक्त पाये जाने पर इसकी सूचना तत्काल कक्ष-निरीक्षक को देकर सम्पूर्ण प्रश्नपत्र की दूसरी पुस्तिका प्राप्त कर लें।
2. परीक्षा भवन में ***प्रवेश-पत्र के अतिरिक्त,*** लिखा या सादा कोई भी खुला कागज साथ में न लायें।
3. ***ओ.एम.आर. उत्तर-पत्र अलग से दिया गया है। इसे न तो मोड़ें और न ही विकृत करें। दूसरा ओ.एम.आर. उत्तर-पत्र नहीं दिया जायेगा। केवल ओ.एम.आर. उत्तर-पत्र का ही मूल्यांकन किया जायेगा।***
4. सभी प्रविष्टियाँ प्रथम आवरण-पृष्ठ पर नीली/काली पेन से निर्धारित स्थान पर लिखें।
5. ***ओ० एम० आर० उत्तर-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर पेन से अपना अनुक्रमांक निर्धारित स्थान पर लिखें तथा नीचे दिये वृत्तों को गाढ़ा कर दें। जहाँ-जहाँ आवश्यक हो वहाँ प्रश्न-पुस्तिका का क्रमांक, केन्द्र कोड नम्बर तथा सेट का नम्बर उचित स्थानों पर लिखें।***
6. ***ओ० एम० आर० उत्तर पत्र पर अनुक्रमांक संख्या, प्रश्नपुस्तिका संख्या व सेट संख्या (यदि कोई हो) तथा प्रश्नपुस्तिका पर अनुक्रमांक और ओ० एम० आर० उत्तर पत्र संख्या की प्रविष्टियों में उपरिलेखन की अनुमति नहीं है।***
7. ***उपर्युक्त प्रविष्टियों में कोई भी परिवर्तन कक्ष निरीक्षक द्वारा प्रमाणित होना चाहिये अन्यथा यह एक अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।***
8. ***प्रश्न-पुस्तिका में प्रत्येक प्रश्न के चार वैकल्पिक उत्तर दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के वैकल्पिक उत्तर के लिए आपको ओ० एम० आर० उत्तर-पत्र की सम्बन्धित पंक्ति के सामने दिये गये वृत्त को उत्तर-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर दिये गये निर्देशों के अनुसार पेन से गाढ़ा करना है।***
9. प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए केवल एक ही वृत्त को गाढ़ा करें। एक से अधिक वृत्तों को गाढ़ा करने पर अथवा एक वृत्त को अपूर्ण भरने पर वह उत्तर गलत माना जायेगा।
10. ***ध्यान दें कि एक बार स्याही द्वारा अंकित उत्तर बदला नहीं जा सकता है। यदि आप किसी प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहते हैं, तो संबंधित पंक्ति के सामने दिये गये सभी वृत्तों को खाली छोड़ दें। ऐसे प्रश्नों पर शून्य अंक दिये जायेंगे।***
11. रफ कार्य के लिए प्रश्न-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के अंदर वाला पृष्ठ तथा उत्तर-पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ का प्रयोग करें।
12. परीक्षा की समाप्ति के बाद अभ्यर्थी अपना ओ.एम.आर. उत्तर-पत्र परीक्षा कक्ष/हाल में कक्ष निरीक्षक को सौंप दे। अभ्यर्थी अपने साथ प्रश्न पुस्तिका तथा ओ.एम.आर. उत्तर-पत्र की प्रति ले जा सकते हैं।
13. अभ्यर्थी को परीक्षा समाप्त होने से पहले परीक्षा भवन से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
14. यदि कोई अभ्यर्थी परीक्षा में अनुचित साधनों का प्रयोग करता है, तो वह विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित दंड का/की, भागी होगा/होगी।